बाइबल टीचर

वर्ष 21 सितम्बर 2024 अंक 10

सम्पादकीय

मसीह में हमारी आशा

बाइबल हमे बताती है कि ''धन्य हैं वे जो प्रभु में मरते हैं'' (प्रकाशित 14:13)। हमें जानना चाहिए कि पहिली शताब्दी के मसीहीयों पर बहुत अत्याचार हो रहा था। उन्हें मारा-पीटा जाता था तथा जेलखानों में डाला जाता था, और कई प्रकार से सताया जाता था। यहूदी लोग तथा गैर यहूदी लोग मसीहीयों से घृणा करते थे। रोमियों की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि कई लोग यहुदी धर्म को छोड़कर मसीही बन गये थे। मसीहीयों को सताया जाता था।

जब प्रेरित पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन प्रचार किया तब लगभग 3000 लोगों ने उसी दिन बपतिस्मा लिया तथा उसी दिन वे मसीही बन गये थे। प्रतिदिन यीशु का प्रचार हो रहा था तथा लोग अपने पापों से मन फिराकर बपतिस्मा ले रहे थे। एक विशेष बात जो हम देखते हैं कि यह लोग प्रतिदिन यीशु की बातों में तथा प्रेरितो से शिक्षा पाने में लगे रहते थे। यह मसीही लोग पूरी ईमानदारी से प्रभु के साथ चल रहे थे।

कई लोगों ने मसीहीयत को बिल्कुल से समाप्त करने का सोचा था परन्तु वे ऐसा करने में सफल नहीं हो सके। रोमी सरकार के समय में एक राजा था डोमीशियन, उसने भी मसीहीयों पर बहुत अत्याचार किये। उस समय में उनके विश्वास के कारण उन्हें मरवा दिया गया था।

परन्तु मसीही लोगों को एक आशा दी गई है कि प्रभु यीशु में हमारे पास एक नई आशा है। परमेश्वर ने हमसे जो वायदे किये हैं वो आज भी सच्चे हैं। अपने वचन में प्रभु ने कहा है, जो अंत तक विश्वास योग्य बना रहेगा उसे मैं जीवन का मुकुट दूंगा (प्रकाशित 2:10)। जब मसीही लोग प्रभु के कारण दुख झेल रहे थे तब प्रभु ने कहा ''जो दुख तुझको झेलने होंगे, उनसे मत डर, क्योंकि देखो, शैतान तुम में से किसी को जेलखाने में डालने पर है ताकि तुम परखे जाओ। शैतान अपना काम कर रहा है परन्तु क्या हम यीशु का प्रचार बंद कर दें? नहीं, वचन का प्रचार करना हमारा कार्य है।''

मसीही लोग एक आशा के ऊपर जी रहें हैं कि प्रभु यीशु एक दिन वापस आयेगा,

इसलिये अपनी आशा को बनाये रखें। तीतुस 2:11-14 में हम पढ़ते हैं, ''क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है। और हमें चिताता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं; और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें। जिसने अपने आप को हमारे लिये दे दिया, कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले कामों में सरगर्म हो।

हमारे लिये एक और आशा है कि मृत्यु के बाद हमारी आत्मा अनन्तकाल तक जीवित रहेगी अर्थात् यदि हम मृत्यु तक विश्वासयोग्य बनें रहेंगे तब परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे। बाइबल बताती है कि मृत्यु के बाद भी एक जीवन है। प्रेरित पौलुस कहता है, ''क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा, उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी और जो मसीह में मरे हैं वे पहिले जी उठेंगे। (1 थिस्स 4:16)। फिर वह आगे कहता है मसीहीयों से कि ''हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है, और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह की वहां से आने की बाट जोह रहे हैं। वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिस के द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर अपनी महिमा की देह के अनुसार बना देगा। (फिलि 3:20-21)। हम मसीही लोग यह जानते हैं और हमारा पूर्ण विश्वास है कि इस ज़िन्दगी के बाद भी एक और जीवन हमें मिलेगा और वो है अन्नत जीवन। जैसे कि लिखा है कि ''उस आशा की हुई वस्तु के कारण जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी हुई है, जिस का वर्णन तुम उस सुसमाचार के सत्य वचन में सुन चुके हो'' (कुलुस्सियों 1:5)।

एक बहुत बड़ी आशिष की बात यह है कि मसीही लोगों को परमेश्वर की संतान कहा गया है (युहन्ना 3:5)। यीशु मसीह मसीहीयों में वास करता है (कुलु 1:27)। बपतिस्मा लेकर हम यीशु को पहिन लेते हैं (गलातियों 3:27)। जिन लोगों ने मसीह को नहीं पहना है वे उसकी आशिषों के दायरे में नहीं आते तथा उनके पास अनंन्त जीवन की कोई आशा नहीं है (1 कुरि 15:19; इफिसियों 2:12)।

हमारे पास एक बड़ी आशा है और वो यह है कि परमेश्वर हमारा पिता है और प्रभु यीशु हमारा उद्धारकर्ता जो हमारे पापों से हमें मुक्ति देता है। इसलिये मसीही लोगों को इस बात से प्रसन्न होना चाहिए कि उनके पास प्रभु यीशु के अनंन्त जीवन की आशा है। आज प्रेरित पौलुस सब मसीहीयों से कह रहा है कि आशा में आनंन्दित रहो, कलेश में स्थिर रहो, प्रार्थना में नित्य लगे रहो (रोमियो 12:12)।

सबसे डरावनी बात जो हम देखते हैं वो यह है कि जो लोग अधर्म के मार्ग पर चल रहें है और जो लोग नर्क में जायेंगे उनके पास नर्क में कोई आशा नहीं होगी। जो लोग चौड़े मार्ग पर चल रहे हैं, और जिन्हें परमेश्वर और आत्मिक बातों से कोई मतलब नहीं है, वे बिना किसी आशा के अपने पापों में नाश हो जायेंगे।

क्रूस की कथा
सनी डेविड

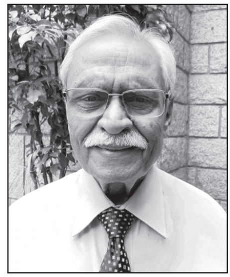

परमेश्वर की दृष्टि में पाप सबसे अधिक घृणाजनक वस्तु है। और मनुष्य की दृष्टि में क्रूस की मृत्यु सबसे अधिक दुख:पूर्ण है। और ऐसी ही मृत्यु को यीशु मसीह ने सहा। बाइबल में लूका के सुसमाचार की पुस्तक के 23 अध्याय तथा 33 पद में लिखा है, ''जब वे उस जगह जिसे खोपड़ी कहते हैं पहुंचे, तो उन्होंने वहां उसे (अर्थात् यीशु मसीह को) और उन कुकर्मियों को भी, एक को दाहिनी ओर और दूसरे को बाई ओर क्रूसों पर चढ़ाया।'' क्रूस लकड़ी के दो भागों से बना हुआ होता था। अर्थात् एक लम्बी और चौड़ी लकड़ी जिसके ऊपर मनुष्य की देह को ठोंका जाता था तथा उस लकड़ी के ऊपरी भाग में एक और लकड़ी बीच में होती थी जिसके साथ क्रूस पर चढ़े व्यक्ति के हाथों कों कीलों से ठोंक दिया जाता था।

उस दिन उस जगह पर तीन क्रूस भूमि में गड़े हुए थे। उन में से दो पर, दाहिनी और बाई ओर, दो कुख्यात डाकू लटके हुए थे, और बीच के क्रूस के ऊपर वह व्यक्ति कीलों से ठुका हुआ था जो संसार भर के लोगों में उत्तम पुरुष था। और न केवल एक उत्तम पुरुष, परन्तु वह परमेरवर का पुत्र, यीशु था। जिसने उस घटना से लगभग 33 वर्ष पूर्व मनुष्य का रूप घारण करके इस संसार में जन्म लिया था।

क्रूस की उस दुख:पुर्ण मृत्यु से लगभग 33 वर्ष पूर्व यीशु का जन्म यहूदा के बेतलहम नाम नगर में हुआ था। और अभी जबकि वह एक छोटा बालक ही था उसे अपनी माता मरियम तथा उसके पति यूसुफ के साथ मिस्र देश को जाना पड़ा। जब वह बालक कुछ बड़ा हुआ तो मरियम तथा यूसुफ ने यीशु के साथ मिस्र देश से प्रस्थान किया वे नासरत नाम के एक छोटे से गांव में आकर बस गए, जहां वह मरियम, तथा यूसुफ, जो गांव में बढ़ई का कार्य किया करता था, के पुत्र के रूप में बड़ा होने लगा। जब उसकी आयु लगभग 30 वर्ष की हुई तो वह यूहन्ना ''बपतिस्मा देनेवाले'' के पास आया जिसने यीशु को यरदन नदी के पानी में बपतिस्मा दिया। पवित्र बाइबल मत्ती 3:15-17 में बताती है, ''और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाई उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।''

और इस घटना के बाद यीशु ने लोगों के बीच में अपना कार्य करना आरम्भ कर दिया। उसने लोगों को शिक्षा दी, उपदेश दिये, और उन्हें परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया, उसने बीमारों को चंगा किया, दुखियों की सहायता की, भूखों को भोजन खिलाकर तृप्त किया, और यहां तक कि उसने मुर्दो को भी जिलाया। उसके साथ बारह पुरुष और थे, ये उसके चेले थे, जिन्हें उसने एक विशेष कार्य को करने के लिये चुना था। उसके प्रभावपूर्ण जीवन और अत्यन्त ही आश्चर्यपूर्ण कार्यो के फलस्वरूप उसका यश आस पास के सारे देशों में शीघ्र ही फैल गया। लोगों की भीड़ की भीड़ बड़ी दूर-दूर से उसके उपदेशों को सुनने के लिये आती थी। लोग अपने बीमारों को चंगा कराने के लिये उसके पास लाया

करते थे। उस समय के साधारण लोग उसे प्रसन्नता से सुनते और ग्रहण करते थे। परन्तु उस समय के शासक, घार्मिक तथा राजनीतिक अगुए, उसकी बढ़ती और फैलती हुई प्रसिद्धी तथा लोकप्रियता को देखकर उसके प्रति डाह और ईर्ष्या से भर गए। और वे उत्सुक होकर एक ऐसे अवसर की खोज करने लगे कि वे उसे किसी कारण दोषी ठहराकर मौत के घाट उतार दें। और ज्यों-ज्यों यीशु की प्रसिद्धी बढ़ती गई उनकी डाह और ईर्ष्या भी अधिक होती गई, और वह यहां तक बढ़ गई कि एक दिन उसने एक भयानक षडयन्त्र का रूप ले लिया।

और एक संध्या को जब वह गतसमनी नाम के एक स्थान पर प्रार्थना करने को गया तो एक बड़ी भीड़ ने आकर उसे पकड़ लिया। तब वे उसे ले गए, उस पर मुकदमा चलाया गया। मुकदमा! यदि सच कहा जाए तो वहां न्याय का जोरदार ठट्ठा तथा उपहास किया गया। उन्होंने उसके मुंह पर थूका, उसे घूंसे और थप्पड़ मारे, उसे निरादर किया; उसके सिर पर उन्होंने नुकीले कांटों का एक मुकुट सा रखा; फिर उसे कोड़े मारकर घायल किया गया; और झूठी गवाहियों के बल पर उसे दोषी ठहराया गया। परन्तु सबसे भयानक और क्रूरता के क्षण उस समय आएं जब यरुशलेम नगर की सड़कों पर ये शब्द गूंजने लगे: ''उसे क्रूस पर चढ़ाओ! उसे क्रूस पर चढ़ाओ!'' तब, उसे अपना क्रूस अपनी घायल देह पर लिये, गिरते-पड़ते लोगों की क्रोधित भीड़ के साथ-साथ ले जाया गया। और लूका 23:33 में हम पढ़ते हैं कि ''जब वे उस जगह जिसे खोपड़ी कहते हैं पहुंचे, तो उन्होंने वहां उसे और उन कुकर्मियों को भी एक को दाहिनी और दूसरे को बाई ओर क्रूसों पर चढ़ाया।''

दाहिनी और बाई ओर क्रूसों पर चढ़े हुए व्यक्ति कुकर्मी थे तथा वे अपने ही अपराधों का दन्ड भुगत रहे थे। परन्तु बीच के क्रूस पर लटका हुआ व्यक्ति बिल्कुल निरापराध था। उसके विषय में परमेश्वर का पवित्र-शास्त्र 1 पतरस 2:22, 23 में गवाही देकर कहता है कि ''न तो उसने पाप किया, और न उसके मुह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपकों सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था।''

यीयु निष्पाप था, उसने कोई अपराध नहीं किया था, परन्तु फिर भी वह क्रूस पर चढ़ाया गया। और इसमें कोई संदेह नहीं कि उस समय के वे घार्मिक तथा राजनीतिक अगुवे उसकी बढ़ती हुई प्रसिद्धी को देखकर उसके शत्रु बन गए थे; और इसी प्रकार से यह भी सच है कि उसके अपने ही एक चेले ने उसे उसके शत्रुओं के हाथ पकड़वाया था; और इस से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि उस में कोई दोष न होते हुए भी लोगों ने उसके विरोध में उसे मार डालने की सम्मति की थी। परन्तु वास्तव में यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के पीछे एक बहुत बड़ा कारण था। और वे सब लोग इस बात से अनजान थे कि वह वास्तव में परमेरवर की एक बहुत बड़ी योजना को पूरा कर रहा था। यह परमेश्वर की इच्छा थी कि यीशु दुख उठाए और मारा जाए। यीशु स्वयं अपने विषय में होनेवाली सब बातों का पूरा ज्ञान रखता था। बाइबल में हम पढ़ते हैं कि जब लोगों की भीड़ यीशु को पकड़ने के लिये आई तो उसके चेलों में से एक ने उन लोगों का विरोध करना चाहा, परन्तु यीशु ने उस से कहा, ''क्या तू नहीं समझता, कि मैं अपने पिता से विनती कर सकता हूं, और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटनो से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा? परन्तु पवित्र शास्त्र की वे बातें कि ऐसा ही होना अवश्य है, क्योंकर पूरी होंगी?'' और यूहन्ना

अपने सुसमाचार की पुस्तक के 18:11 में इसी घटना का उल्लेख करके कहता हैं कि यीशु ने अपने उस चेले से कहा, ''अपनी तलवार काठी में रख: जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है क्या मैं उसे न पीऊं?'' और इस से भी पहले कि वह पकड़वाया जाता, उसे यह मालूम था कि उसे कौन पकड़वाएगा। मत्ती 26:21-23 में लिखा है, कि जिस रात को वह पकड़वाया जानेवाला था उसी सांझ को वह अपने बारहों चेलों के साथ भोजन करने को बैठा, और, ''जब वे खा रहे थे, तो उसने कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा। इस पर वे बहुत उदास हुए, और हर एक उस से पूछने लगा, हे गुरु, क्या वह मैं हूं? उसने उत्तर दिया, कि जिसने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है, वही मुझे पकड़वाएगा।'' और फिर, हम देखते हैं कि जब वे उसे पकड़कर पीलातुस हाकिम के पास ले गए, और उसे दोषी ठहराने के लिये तरह-तरह के झूठे दोष उस पर लगाने लगे तो पीलातुस को बड़ा अचम्भा हुआ कि यीशु अपने बचाव के लिये कुछ नहीं बोलता। और यूहन्ना 18:10,11 में हम पढ़ते हैं कि तब ''पीलातुस ने उससे कहा, मुझ से क्यों नहीं बोलता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है। यीशु ने उत्तर दिया, कि यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता।''

वास्तव में यीशु अपने दूखों और मृत्यु का सम्पूर्ण पूर्वज्ञान रखता था। और उसके इस संसार में आने का केवल एक यही उद्देश्य था कि वह क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला जाए। और उस समय जबकि वह इस पृथ्वी पर जीवित था, यूहन्ना 3:14 में उसने इस भेद को लोगों पर प्रगट करके कहा कि ''जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊचे पर चढ़ाया जाए।'' जिन लोगों से यीशु ने ये बातें कहीं, वे जानते थे कि सैकड़ों वर्ष पूर्व जब परमेश्वर ने उनके पूर्वजों को मिस्र देश के दासत्व के बन्धनों से मुक्त कराया था, तो उनकी अगुवाई करने के लिये परमेश्वर ने मूसा नाम के एक व्यक्ति को नियुक्त किया था। परमेश्वर उन लोगों को मूसा की अगुवाई में एक स्वतंत्र देश में ले जाना चाहता था। परन्तु मार्ग में आनेवाली कठिनाईयों के कारण जब वे लोग मूसा तथा परमेश्वर का विरोध करने लगे तो परमेश्वर ने उन्हें दन्डित करने के लिये उनके बीच में तेज़ विषवाले सांप भेजे, जो उनको डसने लगे, और उनमें से बहुतेरे मर भी गए। गिनती 21:4-9 में इस घटना का वर्णन इस प्रकार से हुआ है, ''तब लोग मूसा के पास जाकर कहने लगे, हमने पाप किया है, कि हमने यहोवा के और तेरे विरुद्ध बातें की हैं; यहोवा से प्रार्थना कर कि वह सांपों को हम से दूर करे। तब मूसा ने उनके लिये प्रार्थना की। यहोवा ने मूसा से कहा, एक तेज विषवाले सांप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका; तब जो सांप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा। सो मूसा ने पीतल का एक सांप बनवाकर खम्भे पर लटकाया; तब सांप के डसे हुओं में से जिस जिस ने उस पीतल के सांप की ओर देखा वह जीवित बच गया।

अपने विषय में इस उदाहरण को देकर यीशु ने लोगों को बताया कि जिस प्रकार से मूसा ने परमेश्वर की इच्छा से सांप को ऊचे पर चढ़ाया, उसी तरह से वह भी परमेश्वर की इच्छा से क्रूस के ऊपर चढ़ाया जाएगा। और जिस प्रकार से पीतल का वह सांप जो लोगों के प्राणों को बचाने का कारण बना, वैसे ही यीशु भी, जब वह क्रूस पर चढ़ाया जाएगा

तो लोगों को पाप से बचाकर उनके उद्धार का कारण ठहरेगा। और जिस प्रकार से पीतल का वह सांप उन सब लोगों को बचाने के लिये ऊंचे पर लटकाया गया था, उसी तरह से यीशु भी संसार के सब लोगों के पापों के निमित्त क्रूस के ऊपर चढ़ाया जाएगा, ताकि सब लोगों की मुक्ति का कारण ठहरे। परन्तु जिस प्रकार से उस जंगल में पाप के दन्ड से केवल वही लोग बच पाए जिन्होंने पीतल के उस सांप की ओर देखा था, वैसे ही केवल वही लोग पाप के दन्ड, अर्थात् अनन्त मृत्यु से बच पाएंगे जो यीशु में विश्वास करके उसको आज्ञाओं का पालन करेंगे। यही कारण है कि उसकी मृत्यु और मरे हुओं में से जी उठने के पश्चात इब्रानियों की पत्री के 5 अध्याय के 8 तथा 9 पदों में यों लिखा गया, ''और पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया।''

अपनी मृत्यु से पूर्व, यूहन्ना 3:16 में प्रभु यीशु ने कहा, ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' वास्तव में परमेश्वर ने आपसे और मेरे से और संसार के सभी लोगों से ऐसा अद्‌भुत प्रेम रखा कि उसने मनुष्यों को पाप के भयंकर दन्ड से बचाने के लिये अपने पुत्र यीशु को बलिदान कर दिया। उसने जगत के सब लोगों के पापों के कारण अपने पुत्र यीशु को क्रूस पर चढ़वाकर दन्डित किया। पाप जितना घृणित और भयंकर है वैसी ही अपमानपूर्ण तथा भयंकर मृत्यु को यीशु ने सहा, और क्रूस के ऊपर अपने प्राणों को बलि करके मनुष्यों के पापों का कर्ज़ उस ने स्वयं चुका दिया। मेरे मित्रो, आज मुझे बड़ी प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है, और मैं आपको यह आनन्द का सुसमाचार देना चाहता हूं, कि यदि आज आप यीशु के क्रूस की कथा को स्वीकार करके यीशु में विश्वास करें, और अपने पापों से पश्चाताप करके यीशु के नाम से अपने अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें तो आप अपने पापों से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। और फिर आनन्द से आप यह कह सकते हैं: ''पाप का बन्धन तोड़ा गया, मैं आज़ाद हूं, हां आज़ाद! सब अपराध भी दूर हो गया, मैं आजाद हूं, हां आज़ाद!''

मित्रो, मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उस ने मुझे यह सुअवसर दिया, कि मैं परमेश्वर के प्रेम, और यीशु के क्रूस की कथा का सुसमाचार आप तक पहुंचाऊं। क्या आप सुन रहे हैं? पवित्र बाइबल रोमियों 5:6-8 में कहती है, ''क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।'' हां, मसीह केवल मरा ही नहीं, परन्तु वह हमारे पापों के कारण मरा। उसने हर एक मनुष्य के लिये मृत्यू का स्वाद चखा। उसकी अपमानपूर्ण तथा कठोर मृत्यु संसार के प्रत्येक व्यक्ति के लिये थी। पौलुस नाम का यीशु का एक प्रेरित 2 कुरिन्थियों 5:21 में प्रभु यीशु के विषय में लिखते हुए कहता है, ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने (अर्थात् परमेश्वर ने) हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।'' वास्तव में सम्पूर्ण संसार में केवल यीशु मसीह ही एक ऐसा व्यक्ति हुआ जिसने कभी कोई पाप नहीं किया और इसका मुख्य

कारण यह है कि यद्यपि वह मनुष्य के रूप में इस संसार में प्रगट हुआ, परन्तु वास्तव में वह स्वयं परमेश्वर का पुत्र था। उसने मनुष्यों के पापों को अपने ऊपर लेकर अपने आप को पापी बनाया और संसार के सभी लोगों के पाप-रूपी रोगों को स्वयं अपनी देह पर सह लिया। वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया; वह हमारे ही अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; और हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, ताकि उसके मार खाने से हम लोग चंगे हो जाए। वास्तव में पापी तो हम हैं और इस कारण पाप का दन्ड अवश्य ही हमें मिलना चाहिए था; क्योंकि हम तो सब के सब भेड़ों की नाई भटक गए थे; हम ने पाप करके पवित्र परमेश्वर का विरोध किया था। परन्तु, परमेश्वर प्रेम हैं। उसने हम सभों के अधर्म का बोझ यीशु पर लादकर, हमारे स्थान पर उसे दन्डित किया। यही कारण है कि बाइबल 1 पतरस 2:24 में कहती है कि ''वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं।''

मित्रो, इस समय मैं आपके सामने एक प्रश्न रखता हूं: क्या आप यीशु के क्रूस की कथा पर विश्वास करते हैं, या यह आपको एक मूर्खता प्रतीत होती है? हां, आज संसार में अनेकों ऐसे लोग हैं जो यीशु के क्रूस की कथा को मूर्खता कहते हैं, वे कहते हैं कि यह कैसे हो सकता है कि यीशु के क्रूस पर मरने से मुझे मुक्ति मिल जाए। परन्तु मित्रो, मनुष्य अपने ही ज्ञान के भरोसे पर अनेकों बातों को नहीं समझ सकता। क्योंकि मनुष्य अपने ज्ञान और विचारों में सीमित है, और वह कभी भी परमेश्वर की तरह सर्वज्ञानी नहीं हो सकता। क्या आप बता सकते हैं, कि जब आप एक मरे हुए बीज को भूमि में दबा देते हैं तो कुछ समय बाद वह क्योंकर एक नए पौधे के रूप में फिर से भूमि में से बाहर निकल आता है? क्या यह परमेश्वर की सामर्थ का प्रतीक नहीं है? परन्तु मान लीजिए, कि यदि आप एक बीज को एक ऐसे व्यक्ति के पास ले जाएं जो न तो पेड़-पौधों के विषय में कुछ जानता हो, न ही उसने कभी किसी बीज या पेड़-पौधे को देखा हो। अब ऐसे व्यक्ति को यदि आप वह बीज दिखाकर उस से कहें कि भूमि में उसे गाड़ देने के बाद एक नया पौधा उस से पैदा हो जाएगा। तो वह अवश्य ही इस बात को बड़ी मूर्खता बताएगा। क्योंकि वह इस बात से बिल्कुल अनजान है। इसी प्रकार से, मित्रो, बाइबल 1 कुरिन्थियों 1:18,25 में कहती है कि, ''क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है ..... क्योंकि परमेरवर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से ज्ञानवान है; और परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों के बल से बहुत बलवान है।''

मित्रो, आज मैं आप से पूछता हुं, क्या क्रूस की कथा आपके निकट मूर्खता है? या यीशु के क्रूस की कथा आप के निकट आपके उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है? क्या आप यह विश्वास करते हैं कि यीशु आपके लिये मरा और वह आपका उद्धार कर सकता है? मरकुस 16:16 में यीशु ने कहा, कि इस सुसमाचार को सुनकर, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।'' परमेश्वर का वचन जीवन भर आपकी अगुवाई करे।

वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा:

सहायक का वायदा

जे. सी. चोट

यीशु इस संसार में पापियों को बचाने के लिए आया था (1 तीमुथियुस 1:15)। हमें यह भी बताया गया है कि वह खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आया था (लूका 19:10)। इसके और इस तथ्य के बावजूद कि मसीह ने निष्पाप जीवन जिया और वह केवल भलाई करता रहा फिर भी उसके शत्रु थें और अंत में उसे क्रूर क्रूस के ऊपर बलिदान दिया जाना था। उसे यह सब मालूम था और यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसका काम बंद न हो, उसने सिखाने और प्रशिक्षित करने के लिए बारह पुरुषों को चुना ताकि वे इस संसार में उसके चले जाने के बाद उसके काम को आगे बढ़ा सकें। उसे यह भी मालूम था कि वे हैं तो मनुष्य ही, जो गलती कर सकते थे, कई बातों को जो उसने उन्हें बताई, या सिखाई थीं, या उन बहुत सी सच्चाइयों को जिन्हें वह चाहता था कि वे संसार को दें, समझने में भूल कर सकते थे। यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनकी अगुआई और निर्देशन बिल्कुल सही हो, उसने वायदा किया कि अपने जाने के बाद वह उनके लिए एक सहायक भेजेगा।

नये नियम में यूहन्ना की पुस्तक में हम उन कुछ बातों को पढ़ते हैं जो सहायक के सम्बन्ध में लिखी गई हैं। प्रेरितों से बात करते हुए मसीह ने कहा, "मैं पिता से विनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा। "मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूंगा; मैं तुम्हारे पास आता हूं। और थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे; इसलिये कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे। उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूं, और तुम मुझ में, और मैं तुम में। जिसके पास मेरी आज्ञाएं हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है; और जो मुझ से प्रेम रखता है उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और में उससे प्रेम रखूंगा और अपने आप को उस पर प्रकट करूंगा'" (यूहन्ना 14:16-21)।

प्रेरितों से मसीह ने कहा, ''परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन व्याकुल न हो और न डरे। तुम ने सुना कि मैंने तुम से कहा, "मैं जाता हूं, और तुम्हारे पास फिर आऊंगा। यदि तुम

मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते कि मैं पिता के पास जाता हूं, क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है'' (यूहन्ना 14:26-28)।

फिर मसीह ने समझाया, "परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे में तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा; और तुम भी मेरे गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो" (यूहन्ना 15:26,27)।

आगे पढ़ने पर हम देखते हैं कि उस ने कहा, "तौभी मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा। वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा। पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते; और धार्मिकता के विषय में इसलिये कि में पिता के पास जाता हूं, और तुम मुझे फिर न देखोगे; न्याय के विषय में इसलिये कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है।

''मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। जो कुछ पिता का है वह सब मेरा है; इसलिये मैं ने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे'" (यूहन्ना 16:7-16)।

अब इन सभी आयतों में हमें इन बातों का पता चलता है:

- मसीह यहां केवल प्रेरितों से बात कर रहा था।
- इसलिए उसने सहायक का वायदा केवल उन्हीं को दिया, न कि संसार को और न ही अन्य चेलों को।
- सहायक का परिचय पवित्र आत्मा के रूप में कराया गया।
- सहायक का प्रभु के चले जाने के बाद प्रेरितों पर आना था।
- सहायक यानी पवित्र आत्मा का उनके साथ होना था, उन्हें वे सब बातें याद करवानी थीं जो यीशु ने उन्हें बताई थीं, उन्हें सब सत्य में अगुआई देनी थी, उन पर होने वाली बातें प्रकट करनी थीं, उन्हें अन्य भाषाओं में बोलने के योग्य बनाना था और उनके लिए आश्चर्यकर्म करना सम्भव बनाना था।
- उनके पास सहायक भेजने की सामर्थ या अधिकार केवल मसीह के पास होना था।
- सहायक के साथ प्रेरित ने जो आरम्भ से प्रभु के साथ रहे थे, उसके गवाह होने थे।

लूका ने भी प्रेरितों पर पवित्र आत्मा को भेजने के मसीह के वायदे की बात की थी। अपनी मृत्यु, दफनाए जाने, और जी उठने के बाद प्रभु प्रेरितों पर प्रकट हुआ, ''फिर

उस ने उन से कहा, 'ये मेरी वे बातें हैं, जो मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कही थीं कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों।' तब उसने पवित्र शास्त्र बूझने के लिये उनकी समझ खोल दी, और उनसे कहा, 'यों लिखा है कि मसीह दुःख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा, और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो। और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।' तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी; और उन्हें आशीष देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया। तब वे उसको दण्डवत् करके बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए; और वे लगातार मन्दिर में उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थे' " (लूका 24:44-53)।

बाइबल में प्रेरितों 1:26 में यहूदा की जगह मत्तियाह के प्रेरित चुने जाने के साथ समाप्त हो जाता है। यह आयत "... अतः वह उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया" के साथ खत्म हो जाती है। अब हम प्रेरितों 2 के साथ आरम्भ करने को तैयार हैं। याद रखें कि मूल हस्तलेख में कोई आयत या अध्याय नहीं है (क्योंकि बाइबल को पढ़ने और याद रखने के लिए इसे अध्यायों और पदों या आयतों में सदियों बाद बांटा गया)। विचार और गतिविधि की श्रृंखला अगली बात तक जारी रहती है। इसलिए आयत 26 का अंतिम संज्ञा शब्द "प्रेरितों" प्रेरितों 2:1 के आरम्भिक सर्वनाम "वे" के पूर्वपद का काम करेगा और इसे इस प्रकार पढ़ा जाएगा: "जब पिन्तेकुस्त का दिन आया तो वे (यानी प्रेरित) सब एक जगह इकट्ठे थे" (प्रेरितों 2:1)। आगे पढ़ने पर वचन बताता है, "एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया" (प्रेरितों 2:2)।

इस आवाज़ से सारा घर गूंज गया, वहां कौन बैठा था? वहां प्रेरित बैठे हुए थे। "और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक (यानी प्रेरितों) पर, (जिन्हें पवित्र आत्मा देने का वायदा दिया गया था) आ ठहरीं।" "वे सब (प्रेरित) पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे (प्रेरित) अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे" (प्रेरितों 2:3,4)।

तब पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और बोलने लगा । ये ग्यारह कौन थे? बेशक ये प्रेरित ही थे। पतरस ने समझाया कि ये प्रेरित नशे में नहीं थे, जैसा कि भीड़ के कुछ लोग मजाक में सोच रहे थे, बल्कि यहां जो कुछ हो रहा था वह तो योएल नबी के द्वारा कही गई परमेश्वर की बातों का पूरा होना था "कि अंत के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलूंगा" (प्रेरितों 2:14-17)।

क्या परमेश्वर ने उस वायदे को पूरा किया? बिल्कुल। उस वायदे को पूरा

करने के लिए उस ने यहूदी हो या अन्यजाति, सब आज्ञा माननेवालों को अपने आत्मा के नाप दिए:

(1) उस ने प्रेरितों (पौलुस को भी, जो अधूरे दिनों का जन्मा प्रेरित था, और कुरनेलियुस को **पवित्र आत्मा का बपतिस्मा** दिया।

(2) उस ने प्रेरितों को चुने हुए चेलों के ऊपर हाथ रखने के योग्य बनाया ताकि वे भी आत्मा के चमत्कारी दानों को पा सकें, जैसा कि प्रेरितों 6 अध्याय में दिखाया गया है।

(3) और अंत में प्रभु की आज्ञा मानने वाले सब लोगों को, आज हमारे समय में भी, पवित्र आत्मा का दान (यानी वास) मिलता है जो कि गैर चमत्कारी है (प्रेरितों 2:38)।

प्रेरितों 2 के अध्ययन को जारी रखते हुए हम प्रेरितों को वहां इकट्ठा हुए लोगों में सुसमाचार सुनाते देखते हैं जिस में लगभग 3,000 लोगों ने अपने पापों से मन फिराकर बपतिस्मा लेते हुए परमेश्वर की आज्ञा को माना था। जिसके परिणाम स्वरूप आयत 38 की प्रतिज्ञा के अनुसार उन्हें अपने पापों की क्षमा और पवित्र आत्मा का दान मिला। आयत 47 कहती है कि प्रभु ने उन्हें अपनी कलीसिया में मिला दिया।

उसी अध्याय में यह भी ध्यान दिलाया गया है कि प्रभु की आज्ञा माननेवाले लोग प्रेरितों की शिक्षा में लौलीन रहे और प्रेरितों के हाथों से बहुत से अद्‌भुत काम और चिह्न होते थे। क्या ये चिह्न और अद्‌भुत काम बपतिस्मा लेने वाले सभी हज़ारों लोगों के हाथों से होते थे? नहीं, वचन साफ़ कहता है कि बपतिस्मा पाए हुए सभी विश्वासियों को आत्मा का दान बेशक मिलता था पर आश्चर्यकर्म केवल प्रेरित ही करते थे (प्रेरितों 5:12)।

सो आप देख सकते हैं कि इन सभी वचनों में प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के दिये जाने पर ज़ोर दिया गया है। क्यों भला? क्योंकि मसीह की ओर से केवल प्रेरितों को ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने का वायदा दिया गया था। यदि एक सौ बीस लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया होता और सभी 3,000 लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया होता तो इसे उस दिन की घटनाओं के विवरण में लिखा जाता, और यदि आत्मा का बपतिस्मा पाए हुए उन सभी लोगों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिली होती तो प्रेरितों 6 में चेलों में से सात पुरुषों को चुनने की आवश्यकता नहीं होनी थी कि उनके सिर पर हाथ रखे जाएं ताकि उन्हें भी आश्चर्यकर्म करने की शक्ति मिल सके। इन बातों पर विचार करें, और जब आप इन पर विचार करेंगे तो बात साफ़ हो जाएगी ।

निष्कर्ष? आज किसी को भी चमत्कार करने की शक्ति नहीं मिलती क्योंकि हमारे बीच में आज कोई भी प्रेरित जीवित नहीं है जो नये विश्वासियों पर हाथ रखकर उन्हें वह सामर्थ दे सके। जो लोग ऐसी शिक्षा देते हैं वे पवित्र शास्त्र में आत्मा के दिए गए वचनों का ही विरोध करते हैं।

यीशु परमेश्वर है

जैरी बेट्स

अधिकतर लोग यह मानेंगे कि परमेश्वर पिता खुदा है। कोई भी व्यक्ति जो किसी भी प्रकार से परमेश्वर को मानता है वह यह मानेगा कि परमेश्वर पिता खुदा है, सो हम इसे सच मान लेंगे कि यह सही होगा। इस पाठ में हम जिस प्रश्न की बात कर रहे हैं वह यह है कि क्या यीशु खुदा है।

उसका पूर्व-अस्तित्व

एक आयत जो पृथ्वी पर के यीशु के जीवन से पहले उसके पूर्व-अस्तित्व को साबित करती है, वह यूहन्ना 1:1 है: ''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परसेश्वर था।'' हमें वचन और परमेश्वर के बीच अंतर का पता चलता है क्योंकि वचन परमेश्वर के साथ था। यह कहना मूर्खता होगी कि परमेश्वर अपने खुद के साथ था। फिर भी हम देखते हैं कि वचन परमेश्वर था। यानी उसका स्वभाव परमेश्वर था। 1:14 में हम इसी अंतर को देखते हैं, जहां हम पढ़ते हैं कि वचन देहधारी हुआ, जो कि साफ़ तौर पर यीशु के लिए कहा गया है। आयत 15 में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला यह घोषणा करता है कि यीशु उससे बड़ा था क्योंकि वह उससे पहले था। यीशु यूहन्ना से पहले था पर फिर भी शारीरिक रूप में उसका जन्म यूहन्ना से लगभग छह महीने बाद हुआ।

यूहन्ना 8:58 में यीशु ने कहा, ''पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूं'' वाक्यांश का इस्तेमाल निर्गमन 3:14-15 में यहोवा परमेश्वर के अपने आप में वजूद में होने का संकेत देने के लिए किया गया था। यीशु केवल इतना ही नहीं कह रहा था कि वह अब्राहम से पहले जीवित था या वह अब्राहम का अवतार था, बल्कि इसके बजाय उसने अपने लिए परमेश्वर पिता वाला रुतबा ही इस्तेमाल क्यिा। जो उसे परमेश्वर के बराबर और परमेश्वर की तरह अपने आप में वजूद रखने वाला बना देता है।

यीशु स्वर्ग से आया था। यूहन्ना 3:13 में यीशु निकुदेमुस से बात करते हुए कहता है, कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में हैं।'' ''मनुष्य का पुत्र'' स्पष्टतया यीशु के अपने लिए है, इस प्रकार यीशु यह घोषणा करता हैं कि पृथ्वी पर आने से पहले वह स्वर्ग में जीवित था। यूहन्ना 6:51 में यीशु ऐसी ही एक और घोषणा करता है: ''जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी, मैं हूं।'' इसके अलावा यूहन्ना 6:62 में यीशु घोषणा करता है, ''यदि तुम मनुष्य के पुत्र को जहां वह पहले था, वहां ऊपर जाते देखोगे, तो क्या होगा?'' अपनी मृत्यु के बाद यीशु स्वर्ग में वापस लौट गया जहां पर वह पृथ्वी पर आने से पहले था।

हर यहूदी भजन 110 को मसीह का भजन मानता है। इसकी आयत 1 में हम पढ़ते हैं, ''मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, 'तू मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं की तेरे चरणों की चौकी न कर दूं।''' इसमें ''प्रभु'' मसीह को कहा गया है जबकि ''यहोवा'' परमेश्वर पिता है। इस प्रकार परमेश्वर की प्रेरणा से दाऊद अपनी अजन्मी संतान को ''प्रभु'' कहता है। मसीह दाऊद का प्रभु और उसकी संतान दोनों कैसे हो सकता था?

यीशु ने इस भजन को अपने ऊपर लागू किया। ''तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है? 'प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे न कर दूँ।' भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है तो वह उसका पुत्र कैसे ठहरा?'' (मत्ती 22:43-45)। इस प्रकार यदि यीशु मसीह था तो उसके लिए पहले से अस्तित्व में होना आवश्यक था, या अन्य शब्दों में यूं कहें उसके लिए खुदा होना आवश्यक था। मसीह के बारे में गलत समझ रखने के कारण यहूदियों को इसे समझने में परेशानी थी।

परमेश्वर का नाम यीशु के लिए इस्तेमाल किया गया

यशायाह 42:8 में परमेश्वर कहता है, ''मैं यहोवा हूं मेरा नाम यही है; अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूंगा...'' परमेश्वर की प्रेरणा से लिखते हुए मत्ती यशायाह 40:3 से दोहराता है और ऐसा करते हुए वह यहोवा का नाम यीशु के लिए इस्तेमाल करता है। तीतुस 2:13 में तीतुस यह घोषणा करता है कि हम उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के प्रकट होनें की बाट जोहते रहें। ध्यान दें कि यीशु को यहां परमेश्वर कहा गया है।

यीशु के खुदा होने की शायद सबसे स्पष्ट घोषणा यूहन्ना 20 अध्याय में मिलती है। यीशु अपने सब चेलों पर प्रकट हुआ, जिस समय थोमा उनके साथ नहीं था और जब चेलों ने थोमा को बताया कि उन्होंने यीशु को देखा है तो उसने यह ऐलान कर दिया कि जब तक वह यीशु को अपनी आंखों से नहीं देख लेता और उसके हाथों में ठुके कीलों के निशान में उंगली डालकर जांच नहीं लेता तब तक वह विश्वास नहीं करेगा। अगले रविवार यीशु फिर अपने चेलों पर प्रकट हुआ, अब की बार थोमा उनके साथ था। यीशु के जीवित होने की व्यक्तिगत पुष्टि के बाद थोमा ने घोषणा की, ''हे मेरे प्रभु: हे मेरे परमेश्वर।'' यहां परमेश्वर के लिए इस्तेमाल हुआ शब्द थियोस है जो कि यूहन्ना रचित सुसमाचार में कई बार इस्तेमाल हुआ है और हर जगह यह खुदा के लिए ही है। इस प्रकार हमारे पास यह पक्की पुष्टि है कि यीशु वैसे ही खुदा है जैसे परमेश्वर पिता खुदा है।

यीशु को अल्फा और ओमेगा, पहला और अंतिम कहा गया है। अल्फा यूनानी वर्णमाला का पहला अक्षर है जबकि ओमेगा यूनानी वर्णमाला का अंतिम अक्षर है। यशायाह 44:6 में यहोवा यह घोषणा करता है, ''मैं सबसे पहला हूं और मैं ही अंत तक रहूंगा; मुझे छोड़ और कोई परमेश्वर है ही नहीं।'' प्रकाशितवाक्य 1:8 में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ''अल्फा और ओमेगा'' है। केवल कुछ आयतों के बाद (1:17), यीशु प्रेरित यूहन्ना से कहता है कि ''मैं प्रथम और अंतिम हूं।'' प्रकाशितवाक्य 22:12-13 में यीशु के लिए इन्हीं शीर्षकों का इस्तेमाल किया गया है। इस प्रकार से यीशु और सर्वशक्तिमान परमेश्वर दोनों के लिए एक ही शीर्षक इस्तेमाल किए गए हैं, जो यह साबित करता है कि दोनों बराबर हैं।

इब्रानियों 5:9 में हम पढ़ते हैं कि यीशु अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए उद्धार का कर्ता या कारण है। किसी और नाम में उद्धार नहीं है (प्रेरितों 4:12)। लोगों को उनके पापों से परमेश्वर के सिवाय और कोई नहीं बचा सकता। मत्ती 1:12 में मरियम से अपने होने. वाले बच्चे का नाम यीशु रखने को कहां गया था क्योंकि उसने अपने लोगों को उनके पापों से. बचाना था। मसीह वह काम कर रहा हैं जो कि परमेश्वर कर सकता है। इसलिए इसका अर्थ यह हुआ कि यीशु परमेश्वर के साथ बराबर है। यीशु को इम्मानुएल भी कहा गया,

जिसका अर्थ है ''परमेश्वर हमारे साथ।''

कुलुस्सियों 2:9 में पौलुस घोषणा करता है कि परमेश्वर (खुदाई) की परिपूर्णता यीशु में वास करती है परन्तु वह अपने आप में परमेश्वर नहीं है। जब पौलुस यह कहता है कि खुदाई की भरपूरी यीशु में वास करती है, तो वह यह कह रहा है कि हर वह बात जो परमेश्वर को परमेश्वर बनाती है यीशु में भी है। अन्य शब्दों में यीशु उतना ही परमेश्वर है जितना पिता परमेश्वर है।

खुदाई की खूबियां यीशु के लिए इस्तेमाल की जाती हैं

यीशु परमेश्वर की तरह ही अनन्त है। यशायाह 9:6 में यशायाह ने लिखा है ''क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।'' ये सभी नाम बाइबल में अन्य जगहों पर खुदा के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। इब्रानियों 1:8 को भजन संहिता 45:6 से लिया गया है: ''हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा।'' भजन संहिता 45 साफ़-साफ़ खुदाई की बात करता है और पुत्र स्वर्गदूतों से बड़ा है; इस प्रकार हमारे पास यीशु की खुदाई का एक और प्रमाण है क्योंकि उसने सब वस्तुओं को सृजा (कुलुस्सियों 1:16-17)।

यीशु के सर्वशक्तिमान होने की घोषणा की गई है। यूहन्ना 1:3 यह घोषणा करता है कि हर वस्तु की सृष्टि वचन ने की। जिसने सब कुछ बनाया है वह परमेश्वर है (इब्रानियों 3:4); इस प्रकार क्योंकि यीशु ने सब कुछ सृजा इसलिए वह परमेश्वर या खुदा है। इसके अलावा कुलुस्सियों 1:16 में पौलुस घोषणा करता है ''क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सुजी गई हैं।'' यीशु ने सब कुछ सृजा इसलिए यीशु परमेश्वर ही है।

यीशु सब कुछ जानता था। यूहन्ना 2:24, 25 में यूहन्ना लिखता है, ''परन्तु यीशु ने अपने आप को उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योकि वह सब को जानता था; और उसे आवश्यकता न थी कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योकि वह आप ही जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है?'' साफ़ है कि मनुष्य के मन की बातें केवल परमेश्वर जान सकता है; इसलिए यीशु को परमेश्वर घोषित किया गया है।

ईश्वरीय काम यीशु के लिए इस्तेमाल किए गए

यूहन्ना 6 अध्याय में 5,000 लोगों को खाना खिलाने के बाद उसने कहा कि जीवन की रोटी वह है (यूहन्ना 6:48, 51, 53-58)। इसका अर्थ यह है कि आत्मिक रोटी के रूप में यीशु आत्मिक जीवन को बरकरार रखता है। अब तक कोई मनुष्य यह दावा नहीं कर पाया। यूहन्ना 11:25-26 में यीशु ने कहा कि वह पुनरुत्थान और जीवन है, और फिर अपने इस दावे को साबित करने के लिए उसने लाज़र को मुर्दों में से जिलाया। इसका अर्थ यह भी है कि उसके पास जीवन देने की सामर्थ है। ''जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है, उन्हें जिलाता है'' (यूहन्ना 5:21)। जीवन को केवल परमेश्वर ही दे सकता है, इसका अर्थ यह हुआ कि यीशु भी परमेश्वर है। यीशु ने तो अपने

आपको सब्त के दिन का प्रभु होने का दावा किया (मत्ती 12:8)। सब्त का दिन तो परमेश्वर ने बनाया था इसलिए केवल परमेश्वर ही सब्त का प्रभु हो सकता था।

कई जगह पर यीशु ने परमेश्वर के साथ बराबर होने का दावा किया। उसने कहा, ''मैं और पिता एक हैं'' (यूहन्ना 10:30)। यह कहने का उसका अर्थ यह था कि वह परमेश्वर के साथ बराबर आदर का हकदार है। यहूदी लोगों को स्पष्ट समझ थी कि यह दावा करने का क्या अर्थ है, इसीलिए उन्होंने उसे मार डालने के लिए पत्थर उठा लिए। जब यीशु की पेशी हो रही थी तो महायाजक ने उससे साफ़-साफ़ पूछा था कि क्या वह ''परमेश्वर का पुत्र मसीह है'' (मत्ती 26:63-64)। शपथ दिलाए यीशु ने कहा, ''हां, मैं हूं।'' उसने पापों को क्षमा करने की सामर्थ होने का दावा किया, और हर किसी को मालूम था कि पाप केवल परमेश्वर क्षमा कर सकता है। मरकुस 2:1-2 में उसने लकवे के एक रोगी को यह कहने के बाद कि उसके पाप क्षमा हुए, उसे चंगा कर दिया। केवल परमेश्वर ही उस आदमी को चंगा कर सकता था। इसलिए उस आश्चर्यकर्म से यीशु का दावा सच साबित हुआ। यीशु ने सब लोगों का न्याय करने वाला होने का दावा भी किया। ''पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है'' (यूहन्ना 5:22)।

ईश्वरीय आराधना यीशु के लिए थी

यूहन्ना 9 अध्याय में यीशु ने जन्म के एक अंधे को चंगाई दी थी। थोड़ी देर बाद यीशु ने फिर उससे बात की और उससे पूछा कि क्या वह मनुष्य के पुत्र पर विश्वास रखता है। उसने पूछा कि मनुष्य का पुत्र कौन है। तब यीशु ने यह ऐलान किया कि वही मनुष्य का पुत्र है, और उस आदमी के जवाब पर ध्यान दें कि उसने क्या कहा। '' 'हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं।' और उसे दण्डवत किया'' (यूहन्ना 9:38)। मत्ती 14:33 में ऐसी ही एक घटना मिलती है। ''इस पर उन्होंने जो नाव पर थे (यानी चेलों ने) उसे दण्डवत करके कहा, 'सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है।' '' यीशु ने दण्डवत स्वीकार किया जो कि एक उत्साही यहूदी कभी नहीं करता। हर यहूदी इस बात की समझ रखता था कि दण्डवत किए जाने का हकदार केवल परमेश्वर है। यीशु ने कभी दण्डवत स्वीकार नहीं करना था और न ही चेलों ने उसे दण्डवत करना था यदि वह परमेश्वर न होता।

हम परमेश्वर को स्वर्गदूतों को पुत्र को दण्डवत करने की आज्ञा देते भी पढ़ते हैं। इब्रानियों 1:6 पर ध्यान दें: ''और जब पहलौठे को जगत में लाता है तो कहता है ''परमेश्वर के स्र्वगदूत उसे दण्डवत करें।' '' यह आयत व्यवस्थाविवरण 32:43 से ली गई है। पहलौठा स्वाभाविक ही है कि परमेश्वर के पुत्र या यीशु को कहा गया है। परमेश्वर स्वर्गदूतों को, किसी को जो परमेश्वर नहीं हैं दण्डवत करने की आज्ञा नहीं देता।

सारांश

और भी बहुत से हवाले बताए जा सकते थे जो या तो यह संकेत देते हैं या साफ़ घोषणा करते हैं कि यीशु परमेश्वर के साथ बराबर है, परन्तु इतने ही काफ़ी हैं। कोई भी खुले मन वाला व्यक्ति जो बाइबल पर विश्वास रखता है उसे यह समझ होनी चाहिए कि यीशु वैसे ही परमेश्वर है जैसे परमेश्वर पिता परमेश्वर है।

बाइबल के अधिकार की ओर वापस

चार्ल्स बाक्स

बाइबल परमेश्वर का न बदलने वाला पैमाना है। धार्मिकता में मनुष्य को ''जो उसके मन में वह करने की आज्ञा'' नहीं है। उसके पास परमेश्वर का न बदलने वाला पैमाना बाइबल है, जिसके आधार पर उसके जीवन का होना आवश्यक है। गड़बड़ी तब होती है जब ''. ..जिसको जो ठीक सूझ पड़ता [है] वही वह करता [है]'' (देखें न्यायियों 17:6)।

मनुष्य जब खुद ही नियम बन जाता है और अपने धार्मिक काम अपनी इच्छा के अनुसार करने की कोशिश करता है तो गड़बड़ होती ही है। ''हे यहोवा मैं जान गया हूं कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है। मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं'' (यिर्मयाह 10:23)। मनुष्य अपने आप अपने जीवन को अच्छी तरह से नहीं चला सकता।

परमेश्वर ने हमें बाइबल दी है ताकि हम उसकी इच्छा को जानें और अपने जीवनों को उसी के अनुसार ढालें। ''सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने और सुधारने और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए'' (2 तीमुथियुस 3:16,17)।

यीशु ने कहा, ''आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी'' (मत्ती 24:35)। हम बड़ी ईमानदारी से बिनती करते हैं कि जहां बाइबल बोलती है वहां बोलो, और जहां बाइबल चुप है, वहां चुप रहो। हमें चाहिए कि बाइबल से संबंधित बातों को बाइबल में दिए नामों से ही पुकारें और बाइबल में बताई गई बातें बाइबल में बताए गए ढंग से ही करें। बाइबल परमेश्वर का पैमाना या नापने वाली छड़ी है।

बाइबल में दी गई शिक्षाएं हमारी भलाई के लिए हैं। परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना अच्छा ही होता है। सच्ची खुशी परमेश्वर की आज्ञा को मानने से मिलती है। जो कुछ वह करता है वह हमारे भले के लिए ही होता है। ''और यहोवा की जो-जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उनको ग्रहण करे जिससे तेरा भला हो?'' (व्यवस्थाविवरण 10:13)।

हमें रास्ता दिखाने के लिए बाइबल परमेश्वर की रोशनी है। ''तेरा वचन मेरे पांव के लिए दीपक, और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है'' (भजन संहिता 119:105)। बाइबल के बिना हम अन्धेरे में ही चलते हैं। जो लोग अन्धेरे में चलते हैं उन्हें ठोकर लगना निश्चित है।

परमेश्वर से प्रेम करने वाले लोग उसकी आज्ञाओं को अवश्य मानेंगे। ''क्योंकि परमेश्वर से प्रेम रखना यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं'' (1 यूहन्ना 5:3)। बाइबल की बात को मानने से इस जीवन में आनन्द और इसके बाद अनन्त जीवन मिलता है।

हमारे भले के लिए बाइबल हमारी अगुआई करती और हमें दिशा दिखाती है। इसका एक उदाहरण बच्चों द्वारा अपने माता पिता की आज्ञा को मानने में मिलता है। उनका आज्ञा मानना आवश्यक बताया गया है, ''कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे'' (इफिसियों 6:3)।

नया नियम हमें बताता है कि परमेश्वर ने यह घोषणा करने के लिए कि यीशु उसका पुत्र है आकाश में से बात की। ''वह बोल ही रहा था, कि एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और देखो; उस बादल में से यह शब्द निकला, 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं: इस की सुनो' '' (मत्ती 17:5)। यीशु ने कहा: (1) मनुष्य को सिखाया जाना जरुरी है (यूहन्ना 6:44–45), (2) मनुष्य के लिए विश्वास लाना आवश्यक है (यूहन्ना 8:24), (3) मनुष्य के लिए पश्चाताप करना आवश्यक है (लूका 13:3), (4) मनुष्य को अपने विश्वास का अंगीकार करना आवश्यक है (मत्ती 10:32), और (5) मनुष्य के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है (मरकुस 16:16)। मनुष्य के लिए उसका विश्वासी रहना भी आवश्यक बताया गया है (मत्ती 10:22)।

किसी को नहीं पता कि मसीह दोबारा कब आ रहा है। इसलिए हम जागते रहें और तैयार रहें। ''इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा'' (मत्ती 24:42)। आज ही उद्धार का दिन है। ''क्योंकि वह तो कहता है, कि अपनी प्रसन्नता के समय में मैंने तेरी सुन ली, और उद्धार के दिन मैंने तेरी सहायता की: देखो अभी वह प्रसन्नता का समय है: देखो, अभी वह उद्धार का दिन है'' (2 कुरिन्थियों 6:2)। जब आपका उद्धार हो सकता है, तो उद्धार को ले लो।

नये लोग बनने के लिए छुड़ाए गए (इफि. 1:6–10)

जे. लॉकहर्ट

एक आदमी से मसीही के रूप में अपने जीवन के बारे में कुछ बताने को कहा गया। उस ने एक पल के लिए सोचा और फिर कहा, "मैं वह नहीं हूं, जो मुझे होना चाहिए; मैं वह नहीं हूं, जो मैं होने वाला हूं, परन्तु, परमेश्वर का धन्यवाद हो, मैं वह नहीं हूं जो मैं पहले था!"

क्या हम सभी ऐसी ही बात नहीं कह सकते? हमारे जीवन पूरी तरह से अलग होने चाहिए क्योंकि हम यीशु मसीह से मिल चुके हैं। मसीहियत बाद के समय के लिए बिल्कुल नहीं है। इसका लाभ हमारे लिए इस समय हैं, जब हम परमेश्वर के प्रकट किए गए भेद अर्थात् कलीसिया जो उस की देह है, में भाग लेते हैं।

इफिसियों 1:6–10 में पौलुस ने छुटकारे की उस प्रक्रिया में जो हमें नये लोग बनने के लिए मुक्त करती है, पांच बातें बताई हैं। यह प्रक्रिया हमें मसीह के भेद में अर्थात् उस देह में जिसे संसार की उत्पत्ति से पहले अनन्त जीवन के लिए चुना गया था,

भागीदार बनाने के योग्य बनाती है।

छुड़ाने वाला : पौलुस ने कहा कि हमें "उस में" छुटकारा मिला है (1:7)। किस में? आयत 6 के अनुसार यह वही है जिस से परमेश्वर पिता प्रेम करता है। वह बिना किसी संदेह के प्रभु यीशु मसीह ही है (देखें मत्ती 3:17; 17:5)।

कुलुस्सियों के नाम लिखते हुए पौलुस ने कहा, "उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है" (कुलुस्सियों 1:13, 14)।

यीशु परमेश्वर का प्रिय जन है और हमारा छुड़ाने वाला है। हमें उस में स्वीकार किया जाता है। छुटकारे का केवल एक ही स्थान है: *मसीह में* जब परमेश्वर हमें चलाता और पाप की हमारी समस्या को मिटाता है। तभी वह हमें पाप के वश में से वापस खरीद लेता है, और हमें उस में जिस से वह प्रेम करता है, ग्रहण किया जाता है।

यह तो बड़ी रोमांचकारी बात है! यीशु में होना परमेश्वर की ओर से ग्रहण किए जाना है। हमें अपने अनन्तकालिक भविष्य की चिंता करते हुए रातों को जागने की आवश्यकता नहीं है। जो लोग सचमुच में मसीह में हैं, उन्हें ठुकराया नहीं जाएगा, क्योंकि यीशु को उस के पिता द्वारा ठुकराया नहीं जा सकता।

मसीह सिद्ध छुड़ाने वाला है: (1) वह हमारा भाई है, क्योंकि उस ने मांस और लहू को पहना। हर प्रकार से वह हमारे जैसा बनकर हम में से एक बन गया (देखें इब्रानियों 2:17)। कोई स्वर्गदूत छुटकारे का दाम नहीं चुका सकता था। क्योंकि कोई स्वर्गदूत मनुष्य का सम्बन्धी नहीं है। यीशु हमारी तरह रहा; इस कारण वह हमारा बंधु छुड़ाने वाला बनने के योग्य है।

(2) वह दाम चुकाने के योग्य था। क्योंकि उस के पास हमें पाप से खरीदने की चीज़ थी। वह क्या था? उसका लहू। लेव्यव्यवस्था में यही सिद्धांत ठहराया गया था, जिसे इब्रानियों 9:22 में दोहराया गया: "व्यवस्था के अनुसार प्राय: सब वस्तुएं लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं; और बिना लोहू बहाए पापों की क्षमा नहीं होती।" चुकाने के लिए अपने स्वयं के पाप का कोई कर्ज न होने के कारण मसीह हमारे कर्ज को चुकाने के लिए अपने लहू का इस्तेमाल कर पाया।

(3) वह हमारे लिए कीमत चुकाने को तैयार था। हम पढ़ते हैं, "पिता इसलिए मुझ से प्रेम करता है, कि मैं अपना प्राण देता हूं, कि उसे फिर ले लूं। कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन मैं उसे आप ही देता हूं: मुझे उस के देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है: यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है" (यूहन्ना 10:17, 18)।

यीशु हम में से एक था, उस के पास हमारे छुटकारे की कीमत थी, और वह इसे चुकाने को तैयार था। अद्‌भुत छुड़ाने वाला!

छुड़ाए हुए : आयत 7 कहती है, "हम को उस में ... छुटकारा ... मिला है।" "हम" किसे कहा गया है? यह आयत 4 वाले "हमें ... उस में" ही है। ये सब जिन्हें परमेश्वर ने बीते सनातन काल में चुना, अब समय में वह उन्हें छुड़ाता है। उसने किन्हें छुड़ाए हुए होने और अपनी देह का भाग बनाने के लिए चुना? उन सब को, जिन्होंने

मसीह में होना था। यदि आप यीशु मसीह में हैं तो आप जान सकते हैं कि आपको पाप की सामर्थ और सजा से छुड़ा लिया गया हैं। दण्ड और पाप के वश से आपको छुड़ाने के लिए पूरी कीमत चुका दी गई है। आप स्वर्ग की ओर जा रहे हैं!

दर : छुटकारा कभी भी सस्ता नहीं रहा है। विनिमय दर छुड़ाई गई चीज़ के बराबर ही होनी आवश्यक है। आयत 7 आगे कहती है, "हमको उस में उस के लोहू के द्वारा छुटकारा ... मिला है।" पाप से हमारी स्वतन्त्रता की कीमत यीशु मसीह का बहा लहू था। बिना यह कीमत चुकाए हमारे पापों की क्षमा नहीं हो सकती थी। इस से कम में बात ही नहीं बननी थी।

पुरानी वाचा के अधीन पशुओं का लहू शुद्ध किए जाने का प्रतीक था। परन्तु मनुष्य को एक ही बार और सदा के लिए मुक्त करने के लिए केवल मनुष्य का लहू चाहिए था।

> परन्तु जब मसीह आने वाली अच्छी-अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, तो उस ने और भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात् इस सृष्टि का नहीं। और बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया (इब्रानियों 9:11, 12)।

परमेश्वर की धर्मी और पवित्र व्यवस्था में आदेश था कि पाप की मज़दूरी मृत्यु है। मैं आपके लिए नहीं मर सकता था, क्योंकि मुझे अपने दण्ड की कीमत चुकानी है; आप मेरे लिए नहीं मर सकते, क्योंकि आपको अपने दण्ड की कीमत चुकानी है। हमारे सिद्ध छुड़ाने वाले यीशु ने परमेश्वर के न्याय की कीमत के रूप में क्रूस पर एक ही बार अपना लहू बहा दिया ताकि पाप अपने शिकारों को छोड़ दे। हर रविवार प्रभु भोज को लेकर हम उस बड़ी कीमत की यादगार को दिखाते हैं, जो हमारे छुटकारे के लिए दी गई थी।

परिणाम : जब हम छुड़ाए जाते हैं तो क्या होता है? "हम को उस में उस के लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा...मिली है।" छुटकारे का सम्पूर्ण परिणाम पूर्ण क्षमा है। अपने मन की गहराई में इस सच्चाई को डाल लें और आप आनन्द से भर जाएंगे!

कलवरी की कहानी पुकार-पुकार कहती है कि परमेश्वर हमें क्षमा करने को तरसाता है। हमारे पापों की क्षमा क्रूस पर हमारे छुड़ाने वाले की दृष्टि के द्वारा हमारे जीवनों में पाने की परमेश्वर की इच्छा का परिणाम थी। अन्तिम भोज में यीशु ने स्वयं घोषणा की, "... यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है" (मत्ती 26:28)।

इस्त्राएल की संतान इस अवधारणा को समझती थी। प्रायश्चित के दिन के समारोहों में दो बकरे पक्के होते थे (लैव्यव्यवस्था 16:8)। एक बकरे को मार डाला जाता था और इसका लहू तम्बू में अनुग्रह के सिंहासन पर छिड़का जाता था। यह लहू पाप के दण्ड की कीमत को दर्शाता था। फिर दूसरे बकरे के सिर पर हाथ रखते हुए महायाजक लोगों के पापों का अंगीकार करता था। यह ऐसे होता था जैसे उन के पाप इस पशु के सिर पर डाल दिए जा रहे हों। फिर वे बकरे को जंगल में छोड़ देते थे और वह कभी वापस नहीं आता था (देखें लैव्यव्यवस्था 16:21)।

कारण : परमेश्वर हमारे लिए यह सब क्यों करता है? उस के कार्यों के पीछे क्या कारण है?

> उस ने अपनी इच्छा का भेद उस भले अभिप्राय के अनुसार हमें बताया जिसे उस ने अपने आप में ठान लिया था कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे (1:9, 10)।

इसका कारण एकता है। परमेश्वर अपनी सृष्टि को अपने साथ एकता और संगति में वापस लाना चाहता था। अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के पाप करने पर जो सम्बन्ध टूटा था; कलवरी के द्वारा यीशु ने परमेश्वर और मनुष्य के बीच पाप की बाधा को गिरा दिया। एक बार फिर से सृष्टिकर्त्ता और सृष्टि एक सुन्दर सम्बन्ध का आनन्द ले सकते हैं।

सारांश : हमारे जीवन किसी समय पाप से घायल थे। हम परमेश्वर से अलग किए हुए थे, परन्तु उसने अपने अनुग्रह के द्वारा हमें हमारे पापों से स्वतंत्र कर दिया। मसीही लोगों के रूप में हम जीवन की बहुतायत और परमेश्वर की संगति का आनन्द लेने को आज़ाद हैं। स्वर्ग की ओर जाने वालों के रूप में हम आज स्वर्ग की छोटी सी झलक का आनन्द ले सकते हैं।

हमारी मीरास का आधार (1:10–13)

हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं कैसे प्राप्त होती हैं? हम उस के वारिस कैसे बन सकते हैं? इफिसियों 1:10, 11 कहता है, "उसी में हम ... मीरास बनें।" यहां पर अनुवाद हुआ यूनानी शब्द "पहले से ठहराए" या "चुने गए" (छप्ट) आयत 4 में अनुवाद हुए शब्द "चुन लिया" से अलग है। पौलुस ने नये नियम के अपने सारे लेखों में "मीरास" अनुवाद किए गए संज्ञा के क्रिया रूप का इस्तेमाल किया। इसलिए उस के कहने का विशेष अर्थ था कि हमें एक मीरास पाने के लिए चुना गया था।

हमें यह मीरास पाने के लिए कहां चुना गया था? पौलुस ने कहा कि "उसी में" अर्थात् मसीह में। आयत 3 के अनुसार यहीं पर हर प्रकार की आत्मिक आशीष मिलती है। परमेश्वर की मीरास सनातन काल से केवल उसी पुरूष या स्त्री के लिए योजना बनाई गई थी, जिसका मसीह के साथ व्यापक सम्बन्ध है। उसे छोड़ हम परमेश्वर से किसी बात की उपेक्षा नहीं कर सकते।

यह कब होता है? आत्मिक रूप में दिवालिया हुए पुरूष या स्त्री के लिए इन से बढ़कर कठिन प्रश्न नहीं हो सकते: "मैं मसीह में कैसे आता/आती हूं?" और "मैं परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का वारिस कब बनता/बनती हूं?"

पापी व्यक्ति मसीह के बाहर है? कोई पश्चातापी पापी मसीह के बाहर होने से *मसीह में* होने के लिए कब जाता है? पौलुस ने स्पष्ट कहा कि यह बपतिस्मा लेने के समय में होता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने *मसीह यीशु में बपतिस्मा* लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया?" (रोमियों 6:3)। जब कोई व्यक्ति बपतिस्मा लेता है तो परमेश्वर उसे अपने पुत्र में रख देता है और उसे उस के धन का वारिस बना देता है।

पौलुस ने कहा, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने *मसीह में* बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है" (गलातियों 3:26, 27)। विचार फिर वही है। परमेश्वर हमें मसीह में कब रखता है? हम ने मसीह को कब पहना? तब जब हमने उस में बपतिस्मा लिया। जल में बपतिस्मा यीशु की आज्ञा के अनुसार समय के उस ऐतिहासिक बिन्दु को दर्शाता है जब परमेश्वर किसी को वारिस बनाता है। यदि आपने नये नियम की आज्ञा के अनुसार बपतिस्मा लिया है तो आप मसीह में हैं और उस के साथ संगी वारिस भी। यदि नहीं लिया है तो निष्कर्ष से बचा नहीं जा सकता। यदि आप मसीह में नहीं है तो आप परमेश्वर के वारिस की मीरास के भागीदार नहीं होंगे।

यह किस के लिए होता है? पौलुस ने पहला वास्तविक संकेत दिया कि परमेश्वर के भेद में सब प्रकार के लोग हैं जो 1:12, 13 के उसी आधार पर मीरास पाते है:

> कि हम जिन्होंने पहिले से मसीह पर आशा रखी थी, उस की महिमा की स्तुति के कारण हों। और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी।

यहूदी हो या अन्यजाति, पुरूष हो या स्त्री, दास हो या स्वतन्त्र, धनी हो या निर्धन, सब को मीरास मिलने का एक ही आधार है। मीरास *मसीह में* ही हो। एक व्यक्ति को अगले व्यक्ति के साथ बराबर ग्रहण किया जा सकता है परन्तु सब को केवल मसीह में ग्रहण किया जाता है।

परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं (1:11–14)

प्रतिज्ञाएं, प्रतिज्ञाएं, प्रतिज्ञाएं! कौन है जिस ने इन में से हज़ारों प्रतिज्ञाओं को नहीं सुना? प्रतिज्ञाएं विज्ञापन देने वालों, सरकारी अधिकारियों, पतियों और पत्नियों, भाइयों और बहनों, बेटों और बेटियों द्वारा रोज की और तोड़ी जाती हैं। केवल एक है जो अपने वचनों या प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है "जिस ने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है" (इब्रानियों 10:23); "... जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है" (रोमियों 4:21; देखें 2 पतरस 3:9)।

बीते सनातनकाल में, समय के आरम्भ होने से पहले, परमेश्वर ने अपने पुत्र में विश्वासियों की एक देह का विचार बनाया। उस ने उस देह को वर्तमान समय में कलवरी पर अपने पुत्र के लहू बहाने के द्वारा अस्तित्व में लाया। जब परमेश्वर ने उन्हें जो उस की देह में है चुना और उन्हें छुड़ाने के लिए पहले से ठहराया तो उस ने मृत्यु या पराजय के बिना अनन्त जीवन सहित हमें कुछ अद्‌भुत प्रतिज्ञाएं दीं। उन प्रतिज्ञाओं का पूरा होना परमेश्वर की देह अर्थात् कलीसिया के भावी पहलू अर्थात् मसीही मीरास को बनाता है।

"क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएं हैं, वे सब उसी में हां के साथ हैं" (2 कुरिन्थियों 1:20)। परमेश्वर किसी भी प्रतिज्ञा से जो उस ने हमारे साथ की है पीछे नहीं मुड़ता।

जीवन का वरदान

जेन मैकवोटर

"तुम्हें जीवन से प्रेम है, तो समय को बर्बाद मत करो क्योंकि जीवन उसी से बनता है" (बैंजामिन फ्रैंक्लिन)।

हम में से बहुतों को लगता है कि समय एक ऐसी चीज़ है जिसे हम जैसे चाहे इस्तेमाल कर सकते हैं, परन्तु परमेश्वर हमें एक और नये दिन की सुबह और आज की शाम को खत्म होने तक को देने का देनदार नहीं है । समय का हर पल उसकी ओर से दिया गया बहुत खास वरदान है। एक अर्थ में हर नये दिन की शुरूआत में वह इस आग्रह के साथ कि हम इसका इस्तेमाल समझदारी से करें, हमारे हाथों में यह वरदान देता है।

जब हम किसी के आत्महत्या करने की बात को सुनते हैं तो आम तौर पर हमारी प्रतिक्रिया यह होती है कि जीवन को ऐसे अचानक खत्म कर देना नासमझी की बात है। परन्तु हम में से अधिकतर लोगों को इसे यानि समय को कतरा-कतरा बर्बाद करने में कोई दिक्कत नहीं है। हम यह समझ नहीं पाते हैं कि समय को बर्बाद करने का मतलब इसकी हत्या करना है।

मन और तन के "विश्राम" में बिताया गया समय बर्बादी नहीं है और हर दिन के कार्यक्रम में उसे शामिल किया जाना चाहिए परन्तु दिन के अधिकतर घंटे लेटे रहने का सुस्ताने से बिल्कुल कोई वास्ता नहीं है। न ही परमेश्वर या मनुष्य के प्रति हमारे कर्त्तव्यों से कोई वासता है। वे घंटे केवल बर्बाद किए गए हैं।

हर दिन को एक बड़ी बाल्टी के रूप में देखें। हम इसे बेसबॉलों से भर सकते हैं, पर फिर भी इसमें कंचों का एक डिब्बा रखने की जगह होगी। एक नज़र देखकर हम कह सकते हैं कि हमने सारी जगह भर दी है। पर रुकिये। बॉलों तथा कंचों के बीच की दरारों में बंदूक की छोटी छोटी गोलियां काफी मात्रा में आ सकती हैं । जब हम यह सोचते हैं कि इससे काम बिल्कुल खत्म हो गया है तो हमें यह जानकर आश्चर्य होता है कि उस बाल्टी में अभी भी कितनी रेत आ सकती है। जब हमें लगे कि इसमें कुछ और नहीं आ सकता तब भी इसमें एक और चीज़ आ सकती है। हमें पता चलता है कि हम कितने गलत हैं जब उसमें बहुत सा पानी डाल दिया जाता है। इसी प्रकार से हम खाली समय का इस्तेमाल समझदारी से करके हर व्यस्त दिन में कई उपयोगी गतिविधियों को शामिल कर सकते हैं। कहते हैं कि समय की रेत पर पैरों के निशान बैठकर नहीं बने थे।

जैसे मत्ती के अध्याय 25 के कर्मचारियों को अपने-अपने तोड़ों का इस्तेमाल समझदारी से करने का हिसाब देना पड़ा था, वैसे ही हमें भी उस वरदान के देने वाले के सामने बताना पड़ेगा कि हम ने परमेश्वर के हर नये दिन के दान का इस्तेमाल कैसे किया। यदि हम ईमानदार हैं तो हमें इस दान यानि इस कीमती समय को कई बार बर्बाद करने के लिए शर्म आती है। परन्तु हर नया दिन एक और अवसर है, एक नया मौका कि हम फिर से कोशिश करें। इस बहुमूल्य वरदान को यूं ही न बर्बाद करे, क्योंकि हो सकता है कि यह समय फिर दोबारा न मिले।

केवल एक मिनट लगता है

- किसी नये आने वाले व्यक्ति से, जिसके पास से आप गुजर रहे हो, जल्दी से "हैलो" कहकर कुछ बात करने के लिए।
- किसी से बात करने के लिए जो बाहरी मानकर अपने आपको अकेला समझ रहा हो।
- परिचय देने के लिए जो आवश्यक न हो, पर जिससे यह पता चलता हो कि आप मिलनसार हैं।
- किसी को जो बीमार हो, या जिसके परिवार का कोई सदस्य छिन गया हो, दो शब्द कहने के लिए।
- सचमुच में उस बात पर धयान देने के लिए जब कोई बच्चा आपसे कहने की कुछ कोशिश कर रहा है।
- दूसरों के बारे में जो अच्छी बातें आप जानते हों उन्हें आगे किसी और को देने का कष्ट उठाने में।
- मायूस, परेशान या निराशा में डूबे किसी को हिम्मत देने के लिए।

– लेखक अज्ञात

विकास (एवोल्यूशन) *बनाम* उत्पत्ति का विवरण

मैक पैटर्सन

ऐसे लोग हैं जो बाइबल को और एवोल्यूशन की थ्योरी दोनों को मानना चाहते हैं। इस प्रकार से इस शिक्षा को "आस्तिक विकास" का नाम दिया गया है। यानि उनका कहना होता है कि परमेश्वर ने संसार को सृजा, बिल्कुल सही है, परन्तु उसने इसे विकास की प्रक्रिया के द्वारा सृजा है। परन्तु उत्पत्ति की पुस्तक के विवरण और बेमेल थ्योरी के बीच कई कठिनाइयां और विरोधाभास हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार से हैं:

1. उत्पत्ति की पुस्तक बताती है कि पेड़ पौधों का अस्तित्व सूर्य के बनाए जाने से पहले था (उत्पत्ति 1:11-14)। दूसरी ओर एवोल्यूशन यह सुझाव देता है कि पहला पौधा निकलने से लाखों साल पहले सूर्य चमक रहा था।

2. उत्पत्ति की पुस्तक बताती है कि पक्षियों को सृष्टि के पांचवें दिन में सृजा गया था, और कीड़े मकौड़ों और रेंगने वाले जन्तुओं सहित अन्य जीव-जंतुओं को छठे दिन बनाया गया था (उत्पत्ति 1:21-24)। एवोल्यूशन की शिक्षा बताती है कि पक्षी, कीड़े-मकौड़ों तथा रेंगने वाले जीव-जंतुओं के आने से बहुत बाद में विकसित हुए थे।

3. उत्पत्ति की पुस्तक बताती है कि मनुष्य को परमेश्वर ने विशेष रूप से भूमि की मिट्टी से रचा था (उत्पत्ति 2:7; 3:19; 1 कुरिन्थियों 15:45)। विकास की शिक्षा दावा करती है कि मनुष्य बंदर जैसे किसी जानवर की संतान है।

4. उत्पत्ति की पुस्तक यह बताती है कि फलदार पेड़-पौधों को मछलियों से पहले बनाया गया था (उत्पत्ति 1:11)। विकास इस बात का दावा करता है कि मछलियां

फलदार वृक्षों से बहुत पहले विकसित हो गई थीं।

5. उत्पत्ति की पुस्तक स्पष्ट रूप में विश्वव्यापी (सारे संसार में होने वाली) प्रलय के होने की बात करती है (उत्पत्ति 7:10-12, 17-20)। विकास ऐसी किसी भी प्रलय के होने को नकारता है।

इसे पूरी तरह से समझ लेने पर मैंने उस बात पर विश्वास किया जो परमेश्वर ने कहा है न कि किसी मनुष्य की कल्पना पर। बाइबल का पक्ष लेने पर हम कभी गलत नहीं हो सकते और न होंगे।

"आपने सुना होगा"

जॉन स्टेसी

आपने अकसर यह कहते सुना होगा कि जो डाकू यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था उसका बपतिस्मा नहीं हुआ था, तौभी उसको उद्धार मिला था, इसलिये उद्धार पाने के लिये आज हमें भी बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है। इस सम्बन्ध में, सबसे पहली बात तो हम कह सकते हैं, कि यह कैसे कहा जा सकता है कि उसका बपतिस्मा हुआ ही नहीं था? उसे बहुत सी बातों का पता था। उसके मन में यीशु के प्रति आदर था। उसे यीशु के राज्य के बारे में मालूम था और उस ने दूसरे डाकू को, यीशु का निरादर करते देख डांटा था। इस से पहले, लूका 7:29-30 में हम पढ़ते हैं कि सब तरह के लोगों ने फरीसियों और व्यवस्थापकों को छोड़कर यूहन्ना के पास आकर उससे बपतिस्मा लिया था।

दूसरी बात इस सम्बन्ध में यह कही जा सकती है कि जब यीशु स्वयं पृथ्वी पर था तो उसे पाप क्षमा करने का अधिकार था। इस सम्बन्ध में मत्ती 9:6 को देखें। पर जब यीशु क्रूस के ऊपर मरा था और उसने वहां अपने लोहू को बहाया था तो वहां से उसके नए नियम में लिखी बातें लागू हो गई थीं। इब्रानियों 9:14-15 से हम यूं पढ़ते हैं, "तो मसीह का लोहू जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो। और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है।" और फिर, 16 पद में लेखक आगे इस प्रकार कहता है, "क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धनेवाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती।" इन पदों से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि जिस समय यीशु और उस डाकू की मृत्यु हुई थी उस समय मूसा की पुरानी वाचा कायम थी। किन्तु आज हम सब, यीशु की मृत्यु के बाद उसके नए नियम की वाचा के अधीन हैं। वह वाचा जो उसकी मृत्यु के बाद कायम हुई थी। यदि इब्रानियों की पत्री को आप पढ़ेंगे तो आप निश्चय ही यह जान लेंगे कि आज आप को मूसा की व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता नहीं है। आज हमें यीशु के नये नियम को मानना चाहिए। जैसे उसमें लिखा है वैसे ही हमें उपासना करनी चाहिए और उद्धार पाने के लिये जिन आज्ञाओं को मानने के लिये उस में कहा गया है उन्हीं आज्ञाओं को आज हमें मानना चाहिए। ✝